I- TERM EXAMINATION : 2022-23

CLASS - XII (ISC)

HINDI

Time: 3 hrs. M.M.: 80

Candidates are allowed additional 15 minutes for only reading the paper.
They must not start writing during this time.

Answer questions 1, 2 and 3 in section-A and four other questions from section-B on at least three of the prescribed textbooks.

If you answer two questions on anyone book, do not base them both on the same material.

The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [ ].

SECTION 'A' [40 Marks]

Attempt all questions.

Q.1. Write a composition in Hindi in approximately 400 words on anyone of the topic given below : [15]

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 400 शब्दों का निबन्ध लिखिए –

i) समाज सेवा : सच्ची मानव सेवा।

ii) बालक एक कच्ची मिट्टी की तरह है। उसका निर्माण उसके चारों ओर का पर्यावरण करता है। प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक धार्मिक, पारिवारिक एवं स्कूली वातावरण के सन्दर्भ में उदाहरण देकर एक निबन्ध लिखिए।

iii) महत्वाकांक्षा का अर्थ समझाते हुए कि यह मन में कब उमड़ती है, कैसे विकसित होती है और क्यों विकसित होती है– अपनी महत्वाकांक्षा का वर्णन कीजिए।

iv) 'संकट की घड़ी में एकता ही देश की रक्षा का कवच है'– कथन को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक नागरिक के देश की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए कौन–कौन से कर्त्तव्य होने चाहिए, उन्हें आज की परिस्थितियों में स्पष्ट कीजिए।

v) 'चलचित्र ने वर्तमान युवा वर्ग को भ्रमित कर दिया है।' इस कथन को स्पष्ट करते हुए पक्ष या विपक्ष में अपने विचार प्रकट कीजिए।

vi) a) एक ऐसी मौलिक कहानी लिखिए, जिसका अंतिम कथन हो– . . . काश! उस दिन मैंने अपने दिल की सुन ली होती।

b) 'जहाँ सुमति तहाँ सम्पत्ति नाना।'– उक्त सूक्ति को आधार बनाकर निबन्ध लिखिए।

Q.2. Read the following passage and briefly answer the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर अंत में दिये गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:–

प्राचीनकाल में अष्टावक्र नाम के एक महर्षि हुए थे जो अत्यंत विद्वान और ज्ञानी थे। अष्टावक्र शरीर से विकलांग और आठ अंगों से टेढ़े थे। ठीक तरह से चल भी नहीं सकते थे। उनकी कुरूपता को देख सब उन पर हँसते थे। कहते हैं कि किसी शाप के कारण ही उनका जन्म इस रूप में हुआ और नाम मिला 'अष्टावक्र'। अपनी कुरूपता और विकलांगता को अष्टावक्र ने कभी अपने मार्ग की बाधा नहीं बनने दिया। वे मानते थे कि शरीर से बड़ी आत्मा है। शरीर भले ही टेढ़ा–मेढ़ा हो परन्तु आत्मा सुन्दर और शुद्ध होनी चाहिए। अष्टावक्र बचपन से ही ज्ञानी थे और उनमें विद्या प्राप्ति की लालसा थी। बारह वर्ष की उम्र तक वह एक महान् विद्वान बन गये थे। एक बार अपने पिता के बारे में पूछते हुए उन्हें ज्ञात हुआ कि उनके पिता को राजा जनक के दरबार में एक विद्वान से शास्त्रार्थ में पराजित होने के कारण अपमानित होना पड़ा था, दंड भी मिला था। बस! अष्टावक्र ने उसी समय निश्चय किया कि वे राजा जनक के दरबार में जाकर उस विद्वान से शास्त्रार्थ करेंगे और उसे हरा देंगे। वे जैसे ही राजा के सम्मुख पहुँचे कि सभी सभासद जोर–जोर से हँसने लगे। यहाँ तक कि राजा जनक भी अपनी हँसी पर नियंत्रण न कर पाये। अष्टावक्र ने जोर का ठहाका मारा। सभासदों की हँसी की आवाज़ इस ठहाके से दब गयी। सभी स्तब्ध रह गए। राजा जनक अचंभित थे। उनसे रहा न गया। पूछा, "बालक! तुम इतनी ज़ोर से क्यों हँसे?" अष्टावक्र ने प्रश्न के उत्तर में प्रश्न किया–"राजन! पहले आप बताएँ कि आप क्यों हँसे?" राजा जनक कुछ क्षण चुप रहे पर उत्तर तो देना ही था। बोले–"बालक! वास्तव में हमारे हँसने का कारण तुम्हारी कुरूपता थी। मैं अपनी और अपने सभासदों की अशिष्टता के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।" अब अष्टावक्र ने कहा–"राजा जनक, मैंने सुना था कि आपकी सभा में बड़े–बड़े विद्वान और ज्ञानी व्यक्ति हैं और मैं उनसे शास्त्रार्थ करने आया था, परन्तु मुझे तो यहाँ सब हाड़–मांस के शरीर के पुजारी लगते हैं। ये तो शरीर को ही देख रहे हैं, ज्ञान को तो भुला चुके हैं।" राजा जनक को आश्चर्य हुआ, क्या इतनी कम उम्र में भी कोई विद्वान हो सकता है! उन्होंने प्रश्न किया, "मुझे यह बताएँ कि ज्ञान कैसे प्राप्त होता है और मुक्ति कैसे मिलती है?" "राजन यदि ज्ञान चाहते हो तो अंहकार त्याग कर सबसे सीखो और मुक्ति

चाहते हो तो भोग को विष के समान त्याग दो। क्षमा, दया, संतोष, सत्य और सरलता को हृदय में धारण करो।" राजा ने अनेक प्रश्न पूछे। अष्टावक्र ने शांत भाव से विद्वत्तापूर्ण उत्तर दिए। अनुमति मिलने पर उन्होंने सभापंडित से शास्त्रार्थ किया और उसे हरा दिया। अष्टावक्र ने अपनी पूरी आयु ज्ञान की आराधना की, उन्होंने अपने शरीर को अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति पर कभी हावी नहीं होने दिया।

i) अष्टावक्र कौन थे? उनको अष्टावक्र क्यों कहते हैं ? [3]

ii) अष्टावक्र किस उद्देश्य से राजा जनक के दरबार में शास्त्रार्थ करने के लिए गए थे? [3]

iii) अष्टावक्र को देखते ही सभासदों और राजा जनक की हँसी क्यों छूट गई ? [3]

iv) राजा जनक द्वारा अष्टावक्र से ज्ञान और मुक्ति की प्राप्ति की विधि पूछे जाने पर अष्टावक्र ने क्या कहा ? [3]

v) अष्टावक्र के किन गुणों के कारण उन्हें ज्ञानी माना गया ? [3]

Q.3. a) Correct the following sentences : [5]
निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए–

i) इतिहासिक पुरुष अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं।

ii) एकमात्र राधा ऐसी थी जो समय पर कार्यक्रम में आयी।

iii) वह लोग कब आ रहे हैं।

iv) अपने प्राणों को मुट्ठी में रखकर सिपाही आगे बढ़ रह थे।

v) तुम्हारा सब काम ऐसा ही होता है।

b) Use the following idioms in sentences of your own to illustrate their meaning :-
निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए – [5]

i) हाथ–पाँव फूलना।

ii) पानी–पानी होना।

iii) चैन की बंसी बजाना।

iv) काफूर हो जाना।

v) उल्टी गंगा बहाना।

SECTION- [40 Marks]

Answer four questions from this section on atleast three of the prescribed text books :

गद्य संकलन

Q.4. "जा रे हाँक ले जा गाड़ी। ठिकाने तक पहुँचा आना तब लौटना, नहीं तो अपनी खैर मत समझियो और तुम दोनों में से किसी ने भी कभी इस बात की चर्चा कहीं की तो भूसी की आग में जलाकर खाक कर दूँगा।"

i) यह कथन किसने, किससे, कब और क्यों कहा ? [1]

ii) गाड़ीवान गाड़ी लेकर कहाँ बढ़ गया? वह कौन था जिसने गाड़ी पर चढ़कर रज्जब पर लाठी तानी थी? उसने ऐसा क्यों किया ? [2]

iii) उस व्यक्ति ने क्षुब्ध होकर दाऊजी से क्या कहा? दाऊजी ने उसकी बात का क्या उत्तर दिया? [2]

iv) 'शरणागत' कहानी के आधार पर बताइए कि यहाँ पर शरणागत की रक्षा हेतु ठाकुर साहब ने क्या किया? उनके विचारों पर प्रकाश डालिए। [5]

Q.5. 'अब नीलम की समझ में आ गया था कि शायद इस उम्रकैद से रिहाई पाने के लिए ही उसकी शादी का प्रपंच रचा जा रहा है।'–कथन के आलोक में कहानी–'आउट साइडर' की समीक्षा कीजिए। [10]

Q.6. 'एक संदिग्ध फल के लिए तीन हजार का खर्च उठाना बुद्धिमत्ता के प्रतिकूल है।'–'पुत्र–प्रेम' शीर्षक कहानी के आलोक में इस कथन की समीक्षा कीजिए। [10]

काव्य मंजरी

Q.7. "हम नदी के द्वीप हैं,
हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाये।
वह हमें आकार देती है।
हमारे कोण; गलियाँ, अन्तरीप, उभार, सैकत–कूल, सब गोलाइयाँ, उसकी गढ़ी हैं।"

i) द्वीप आखिर क्या है ? [1]

ii) द्वीपों की अभिलाषा क्या है ? [2]

iii) द्वीपों को आकार कौन तथा कैसे प्रदान करता है? [2]

iv) प्रस्तुत पंक्तियों का अर्थ लिखिए। [2]

Q.8. कविता 'बादल को घिरते देखा है।' में कवि ने अपने प्रकृति प्रेम का परिचय देकर बादल को सजीव रूप देकर उसका मानवीकरण किया है।– स्पष्ट कीजिए। [5]

[10]

Q.9. 'उद्यमी नर' कविता में कवि ने श्रम और पुरुषार्थ की महत्ता स्थापित की है–स्पष्ट कीजिए। [10]

उपन्यास (सारा आकाश)

Q.10. "किस समय वे क्या कर बैठेंगे, कोई ठिकाना नहीं। जिन दिनों वे मुझे मारते थे, उन दिनों तो एक अल्हड़ और ज़िद्दी निश्चिन्तता रहती थी कि ज़्यादा से ज़्यादा पीट ही तो देंगे।"

i) यहाँ किसकी तथा क्या बात हो रही है ? [1]

ii) उक्त कथन के आधार पर बाबूजी के स्वभाव का परिचय दीजिए। [2]

iii) यहाँ समर किन दिनों की क्या बात कर रहा है ? [2]

iv) 'बाबूजी का चरित्र परिस्थितियों से निर्मित हुआ है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए। [5]

Q.11. मुन्नी के पति के आने से घर में क्या हलचल मच गई? बाबूजी की घर वालों से क्या बातें हुईं और क्या निर्णय लिया गया ? [10]

Q.12. बोर्ड की फीस भरने के लिए समर ने किससे रुपये माँगे ? उसे इस बारे में क्या–क्या सुनना पड़ा ? स्पष्ट कीजिए। [10]

*****